ए.

आशुतोष कुमार

बनाम

भारत और ए. एन. आर. का फिल्म और टेलीविजन संस्थान। (2021 की सिविल अपील संख्या 7719)

बी.

12 अप्रैल, 2022

[संजय किशन कौल और एम**.** एम**.** सुंदरेश**,** जे**.]**

शिक्षा/शैक्षणिक संस्थानः प्रवेश-अक्षमता-रंग अंधापन-भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान में संपादन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम-अपीलार्थी , रंग अंध व्यक्ति को भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे (एफ. टी. आई. आई.) में संपादन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम करने से बाहर रखा गया है-इस न्यायालय का पिछला आदेश कि अपीलार्थी को अपने रंग अंधापन के कारण चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है-अपीलार्थी ने उचित समायोजन के सिद्धांत पर भरोसा करते हुए, इस न्यायालय को अपनी पिछली टिप्पणियों पर फिर से विचार करने के लिए मनाने की कोशिश की-इसके बाद, विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए अयोग्यता के रूप में रंग अंधापन के पहलू पर विचार करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन-समिति द्वारा सिफारिश की गई कि रंग अंधापन वाले व्यक्तियों को 'सभी के लिए' नामांकन करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

सी.

डी.

ई.

एफ.

मकबूल फिदा हुसैन बनाम राजकुमार पांडे और अन्य।

(2008) एससीसी ऑनलाइन डेल 562; विकास कुमार बनाम यूनियन

लोक सेवा आयोग और अन्य। (2021) 5 एस. सी. सी. 370; प्रणय कुमार पोद्दार बनाम त्रिपुरा राज्य और अन्य, (2017)

जी.

13 एससीसी **351:[2017] 2** एस**.** सी**.** आर**. 797-**संदर्भित।संदर्भित निर्णय

[2017] 2 पैरा **40** को संदर्भित एस**.** सी**.** आर**. 797**

एच.

1094 ए.

1095

आशुतोष कुमार बनाम द फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया एंड ए. एन. आर.

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2021 की सिविल अपील संख्या 7719।

2016 की रिट याचिका (सी) No.12296 में बॉम्बे में उच्च न्यायालय के दिनांकित 07.03.2017 के निर्णय और आदेश से।

कॉलिन गोंजाल्विस, सीनियर एड., ओलिविया बैंग, सत्य मित्रा, एम. शोएब आलम, मोहम्मद। ओवैस, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

बी.

सुश्री ऐश्वर्या भाटी, एएसजी, अमित आनंद तिवारी, आशुतोष झा, सुश्री प्रियंका तेलंग, सुश्री देवयानी गुप्ता, सुश्री मंजुला गुप्ता, ओम प्रकाश शुक्ला, गोपाल झा, सुश्री मनीषा चावा, सुघोश सुब्रमण्यम, अमरीश कुमार, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

सी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

संजय किशन कौल**,** जे।

1. कला चरित्र में गैर-अनुरूपवादी है!

हमें एडगर डेगास के मार्मिक अवलोकन की याद दिलाई जाती है कि "कला"

डी.

यह वह नहीं है जो आप देखते हैं, बल्कि वह है जो आप दूसरों को दिखाते हैं।"

2. प्रत्यर्थी संस्थान एक प्रमुख संस्थान है और यह उम्मीद की जा सकती है कि यह एक उदार विचार प्रक्रिया को प्रोत्साहित करेगा और फिल्मों से जुड़े पाठ्यक्रमों को किसी भी अनुरूपता के दायरे में नहीं रखेगा।यह विचार प्रक्रिया है जिसने हमें रंग अंधापन के पहलू से निपटने के लिए 30.11.2021 पर आदेश पारित करने के लिए प्रेरित किया।हमने पता लगाया था कि रंग अंधापन अंधेपन का एक रूप नहीं है, बल्कि रंग को देखने के तरीके में कमी है।इस चिकित्सा स्थिति के कारण नीले और पीले या लाल और हरे जैसे कुछ रंगों में अंतर करना मुश्किल हो जाता है, और अनुमानित आठ प्रतिशत पुरुष आबादी और एक प्रतिशत से भी कम महिला आबादी में लाल और हरे रंग की कमी होती है, जो रंग अंधापन का सबसे आम रूप है।

ई.

एफ.

3. हमारे सामने जो सवाल खड़ा हुआ है, वह एक मौलिक सवाल है जिसमें एक व्यक्ति जो रंग दृष्टिहीन है, उसे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे (एफ. टी. आई. आई.)/प्रतिवादी संख्या 1 में डिप्लोमा इन एडिटिंग के लिए पाठ्यक्रम करने से बाहर रखा गया है।हमारे लिए उन तथ्यों की गहराई में जाना आवश्यक नहीं है जो पहले से ही उपरोक्त आदेश में देखे गए हैं या उस तारीख को किए गए वकीलों की संबंधित प्रस्तुतियाँ।यह कहने के लिए पर्याप्त है कि इस पर निर्णय लेने के बजाय कि क्या रंग अंधापन एक ऐसा पहलू होगा जो पाठ्यक्रम से गुजरने में एक बाधा होगी, हमने इसे देखने के लिए एक समिति का गठन करना उचित पाया।

जी.

एच.

ए.

मुद्दे और संबंधित मुद्दों में।पक्षों के वकीलों के सुझावों और खोज के अपने रास्ते पर, हमने निम्नलिखित की एक समिति का गठन किया:-

“(i) फिल्म निर्देशक श्री रवि के. चंद्रन (ii) रंगकार-श्री स्वप्निल पटोले

बी.

(iii) स्क्रिप्ट

सुश्री शुभा रामचंद्र

पर्यवेक्षक

(iv) फिल्म संपादक श्री अक्किनेनी श्रीकर प्रसाद (v) पाठ्यक्रम निर्माता/श्री राजशेखरन

सी.

एचओडी, संपादन

(vi) नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. जिग्नेश तस्वाला

(vii) श्री शोएब आलम, अधिवक्ता जो प्रणय कुमार पोद्दार बनाम त्रिपुरा राज्य और अन्य में नियुक्त समिति में वकील थे। (2017) 13 एससीसी 351।"4. हमने शुरुआत में ही एक चेतावनी दी थी कि लगभग छह साल के समय के बीतने को देखते हुए, प्रत्यर्थी को चयन की प्रक्रिया की कठोरताओं से नए सिरे से गुजरना होगा, लेकिन समिति की रिपोर्ट पर विचार करने पर पारित किए जाने वाले आदेश के भाग्य पर निर्भर करते हुए, यदि समिति ऐसा मानती है, तो इसमें रंग अंधापन के कारण भविष्य में बाधा को दूर करने की क्षमता थी।

डी.

ई.

5. हमने समिति द्वारा वर्णांधापन के पहलू पर विचार करने के लिए एक अधिक व्यापक अभ्यास को सुविधाजनक बनाने के लिए भी उचित माना, उन सभी पाठ्यक्रमों के लिए जिनके लिए इसे अयोग्यता माना जाता है।

एफ.

6. समिति की रिपोर्ट हमारे सामने रखी गई है।एफ. टी. आई. आई. के एच. ओ. डी. संपादन श्री के. राजसेकरन को छोड़कर सभी सदस्यों ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनके पास कुछ चेतावनी थी जिन पर हम समिति की रिपोर्ट को देखने के बाद विचार करेंगे।

जी.

7. समिति ने उन दो मुद्दों को सही ढंग से तैयार किया जिन पर समिति की राय निम्नानुसार मांगी गई थीः

"आई. क्या संपादन में डिप्लोमा के लिए प्रदान किया गया पाठ्यक्रम रंग अंधापन से पीड़ित अपीलार्थी द्वारा सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है?

एच.

1097

आशुतोष कुमार बनाम द फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया एंड ए. एन. आर. [संजय किशन कौल, जे।] ए.

ए.

ii.एक अधिक व्यापक अभ्यास को सुविधाजनक बनाने के लिए, समिति की भूमिका उन सभी पाठ्यक्रमों के रंग अंधापन के पहलू पर विचार करना होगी जिनके लिए इसे अयोग्यता माना जाता है।"

समिति के विमर्शों की मुख्य बातें

बी.

8. समिति ने लगभग आठ ऑनलाइन बैठकें कीं।प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में प्रचलित रंग नेत्रहीन व्यक्तियों के प्रवेश की प्रथा के बारे में खुद को सूचित करने के उद्देश्य से, इसने सूचीबद्ध किया और दस शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय फिल्म और टेलीविजन संस्थानों को लिखा, लेकिन उनमें से केवल दो से प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं।समिति के विचार-विमर्श के दौरान, यह पाया गया कि एफ. टी. आई. आई. में प्रवेश लेने के समय अपीलार्थी की रंगांधापन की प्रकृति और सीमा का पता लगाने के लिए एक विशेषज्ञ नेत्र रोग विशेषज्ञ द्वारा उसकी जांच नहीं की गई थी। नेत्र परीक्षण संस्थान के सामान्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा किया गया था।यह देखते हुए कि इस न्यायालय के समक्ष एक आवेदन दायर किया गया था, जिस पर निदेशक, एम्स को रंग दृश्य की कमी की प्रकृति और सीमा का पता लगाने के लिए अपीलार्थी की जांच करने के लिए जल्द से जल्द एक समिति का गठन करने का आदेश दिया गया था।

सी.

डी.

9. 08.03.2022 पर तैयार की गई एम्स की रिपोर्ट में लिखा है कि

अपीलार्थी को "रंग बोध के श्रेणीकरण स्तर के अनुसार लाल और हरे रंग की दृष्टि की कमी थी, उम्मीदवार को रंग बोध (सीपी) 4 पाया गया है।"

ई.

10. इसके बाद समिति ने सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें विभिन्न खंड हैं।

11. रिपोर्ट का पहला खंड रंग अंधापन के नेत्र संबंधी परिप्रेक्ष्य प्रिस्क्रिप्शन से संबंधित है।इसमें चर्चा की गई है:(क) रंगांधापन के बारे में (ख) रंगांधापन के कारण (ग) रंगांधापन के प्रकार।12. रिपोर्ट के (ग) भाग को निम्नानुसार पुनः प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त है:"ग. रंगांधापन के प्रकार

एफ.

जी.

(i) लाल-हरा रंग अंधापनःसबसे आम प्रकार का रंग अंधापन लाल और हरे रंग के बीच अंतर बताना मुश्किल बनाता है।4 प्रकार के लाल-हरे रंग के रंग अंधापन होते हैं:

एच.

1098

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2022] 16 एस सी आर।

· ड्युटेरानोमली लाल-हरे रंग के अंधापन का सबसे आम प्रकार है।यह हरे रंग को और अधिक लाल दिखता है।यह प्रकार हल्का होता है और आमतौर पर सामान्य गतिविधियों के रास्ते में नहीं आता है।

· स्वाभाविक रूप से लाल रंग को अधिक हरा और कम चमकीला बनाता है।यह प्रकार हल्का होता है और आमतौर पर सामान्य गतिविधियों के रास्ते में नहीं आता है।

बी.

· प्रोटानोपिया और ड्युटेरानोपिया दोनों ही आपको लाल और हरे रंग के बीच का अंतर बताने में असमर्थ बनाते हैं।

सी.

((ii) नीला-पीला रंग अंधापनः

इस कम सामान्य प्रकार के रंग अंधापन के कारण नीले और हरे रंग के बीच और पीले और लाल रंग के बीच अंतर बताना मुश्किल हो जाता है।नीले-पीले रंग के अंधेपन के 2 प्रकार हैंः

डी.

· त्रिकोणीय रूप से नीले और हरे रंग के बीच और पीले और लाल के बीच अंतर बताना मुश्किल हो जाता है।

· ट्राइटेनोपिया आपको नीले और हरे, बैंगनी और लाल, और पीले और गुलाबी के बीच का अंतर बताने में असमर्थ बनाता है।यह रंगों को कम चमकीला भी बनाता है।

ई.

((iii) पूर्ण रंग अंधापनः

यदि आपको पूर्ण रंग अंधापन है, तो आप रंग बिल्कुल नहीं देख सकते हैं।इसे मोनोक्रोमेसी भी कहा जाता है, और यह काफी असामान्य है।प्रकार के आधार पर, आपको स्पष्ट रूप से देखने में भी परेशानी हो सकती है और आप प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।विभिन्न प्रकार के रंग अंधापन से विभिन्न रंगों को देखने में समस्या होती है।" बार टू एफ. टी. आई. आई. पाठ्यक्रमः

एफ.

जी.

13. इसके बाद समिति ने ए के विभिन्न मॉड्यूल को ध्यान में रखते हुए रंग अंधापन के कारण एफ. टी. आई. आई. पाठ्यक्रमों के बार की जांच की।

एच.

1099

आशुतोष कुमार बनाम भारत और ए. एन. आर. का फिल्म और टेलीविजन संस्थान। [संजय किशन कौल, जे।] ए.

पाठ्यक्रम जो रंग-दृष्टिहीन उम्मीदवारों को प्रवेश देने में बाधा बन सकता है, ऐसे मॉड्यूल का महत्व और व्यावसायिक उपयोगिता, रंग-दृष्टिहीनता और पेशेवर की व्यावसायिक भूमिका आदि यह निर्धारित करने के लिए कि क्या एक रंग-दृष्टिहीन उम्मीदवार, जिसके पास अन्यथा रचनात्मक क्षमता है, को किसी विशेष टीवी/फिल्म निर्माण पाठ्यक्रम में प्रवेश से वंचित किया जाना चाहिए।

बी.

14. 2020 एफ. टी. आई. आई. विवरण पत्रिका के अनुसार, रंग अंधापन वाले व्यक्ति निम्नलिखित पाठ्यक्रम में भर्ती होने के लिए अयोग्य हैंः

“(i) सिनेमेटोग्राफी, (ii) इलेक्ट्रॉनिक सिनेमेटोग्राफी, (iii) संपादन, (iv) वीडियो संपादन, (v) कला निर्देशन और प्रोडक्शन डिजाइन।”

सी.

15. समिति का विचार है कि रंग अंधता वाले व्यक्तियों को एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित सभी पाठ्यक्रमों में नामांकन करने की अनुमति दी जानी चाहिए। समिति के इस निष्कर्ष में जो तर्क व्याप्त है, वह इस प्रकार हैः

डी.

(क) फिल्म और टेलीविजन रचनाएँ सहयोगात्मक कला रूप हैं।फिल्म पाठ्यक्रमों में रंग दृष्टिहीन उम्मीदवारों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने से रचनात्मक प्रतिभा का त्याग हो सकता है और कला के विकास में बाधा आ सकती है।समावेशिता विविधता को पेश करके इस रचनात्मक कला रूप को समृद्ध करती है, किसी भी सीमा को शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में सहायता से दूर किया जा सकता है।

ई.

(ख) यह एफ. टी. आई. आई. की भूमिका नहीं है कि वह उम्मीदवारों के लिए एक फिल्म/टेलीविजन पेशेवर के रूप में उनकी भविष्य की संभावनाओं को तय करे।यदि उम्मीदवार की सीखने की सीमा को उचित आवास बनाकर या सहायक की मदद से दूर किया जा सकता है, तो उम्मीदवार को एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए पात्र होना चाहिए।

एफ.

(ग) फिल्म संपादन एक सुसंगत अनुक्रम में दृश्यों को इकट्ठा करने की कला, तकनीक और अभ्यास है और एक संपादक का काम केवल यांत्रिक रूप से एक फिल्म के टुकड़े को एक साथ रखना, फिल्म के स्लेट को काटना या संवाद दृश्यों को संपादित करना नहीं है।फिल्म संपादक को छवियों, कहानी, संवाद, संगीत, गति के साथ-साथ अभिनेता के प्रदर्शन की परतों के साथ रचनात्मक रूप से काम करना चाहिए ताकि प्रभावी रूप से "फिर से कल्पना" की जा सके और यहां तक कि एक सामंजस्यपूर्ण संपूर्ण रचना के लिए फिल्म को फिर से लिखा जा सके।

जी.

एच.

फिल्म संपादन पाठ्यक्रम और रंग रचना:16. इसके बाद समिति ने फिल्म संपादन पाठ्यक्रम और रंग श्रेणीकरण पहलू की जांच की जो पांचवें सेमेस्टर में रंग श्रेणीकरण का 20 मिनट का मॉड्यूल है।यह राय है कि एक पेशेवर फिल्म संपादक की भूमिका के लिए रंग श्रेणीकरण की कोई प्रासंगिकता नहीं है।एक रंगकार जो एक विशेषज्ञ पेशेवर है, रंग वृद्धि, सुधार आदि के लिए तैयार करता है।

बी.

17. समिति ने भूमिका के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण किया है जो पूर्व-डिजिटल फिल्म युग में वर्ष 2000 तक देर से है।ब्लैक एंड व्हाइट रश पर फिल्म संपादन किया गया और बाद में रश में रंग जोड़ा गया।इस प्रकार, संपादक को केवल काले और सफेद रंगों से निपटना पड़ता था और रंग दृष्टि की कोई आवश्यकता नहीं होती थी।इस प्रकार एक व्यक्ति में रंग अंधापन की उपस्थिति उन्हें एक विशेषज्ञ फिल्म संपादक बनने से नहीं रोक पाई।

सी.

18. सचित्र रूप से, सिनेमेटोग्राफर श्री रवि के. चंद्रन ने बताया कि सर रोजर डीकिंस सीबीई, प्रशंसित अंतर्राष्ट्रीय सिनेमेटोग्राफरों में से एक हैं और उन्होंने अपने सिनेमेटोग्राफिक कार्यों के लिए ऑस्कर पुरस्कारों के लिए 13 बार नामांकित होने के अलावा ऑस्कर पुरस्कार जीता है और उन्हें नए युग के डिजिटल उपकरणों के संचालन में कठिनाई है, जिसके लिए वे सहायकों पर निर्भर हैं।वास्तव में श्री चंद्रन ने कहा कि वह स्वयं नए युग के जटिल डिजिटल उपकरणों को संभालते समय सहायकों और पेशेवरों की मदद पर निर्भर करते हैं या किसी अन्य सीमा को दूर करने के लिए जहां उन्हें मदद की आवश्यकता हो सकती है।

डी.

ई.

19. एक महत्वपूर्ण पहलू यह देखा गया कि 2020 एफ. टी. आई. आई. विवरणिका में किसी विशेष प्रकार या रंग अंधापन का उल्लेख नहीं था जो प्रवेश के लिए एक बाधा के रूप में काम कर सकता है, लेकिन उल्लेख किया गया है कि रंग अंधापन/रंग दृष्टि की कमी से पीड़ित उम्मीदवार क्रम संख्या 1,2,5,6 और 7 में विशेषज्ञता के लिए आवेदन करने के लिए अयोग्य हैं।

एफ.

मौजूदा रंग संपादन पाठ्यक्रम

20. विश्लेषण किया गया अगला पहलू मौजूदा रंग संपादन पाठ्यक्रम है।एफ. टी. आई. आई. फिल्म संपादन पाठ्यक्रम के विश्लेषण पर, यह पाया गया कि निम्नलिखित प्रकार के रंग अंधापन यानी एक्रोमैटोप्सिया, ट्राइटेनोपिया, ड्यूटेरानोपिया और प्रोटानोपिया वाले उम्मीदवारों को एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित डिप्लोमा इन फिल्म एडिटिंग पाठ्यक्रम में मौजूदा 20 मिनट के अवरोधक रंग तत्व ग्रेडिंग मॉड्यूल को सफलतापूर्वक पूरा करने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं, और अन्य प्रकार के रंग अंधापन वाले व्यक्तियों को ए

जी.

एच.

1101

आशुतोष कुमार बनाम द फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया एंड ए. एन. आर. [संजय किशन कौल, जे।] ए.

मौजूदा पाठ्यक्रम को पूरा करने में कोई समस्या नहीं होगी।ध्यान देने योग्य बात यह है कि समिति ने राय दी है कि "कलर ग्रेडिंग मॉड्यूल" की फिल्म संपादक की भूमिका के साथ कोई प्रासंगिकता या संबंध नहीं है।विदेशी फिल्म संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनः

21. समिति ने अपना बेहतर मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म संस्थानों को उनकी सर्वोत्तम प्रथाओं को जानने के लिए लिखा।प्रतिक्रियाओं के आधार पर, हालांकि सीमित, यह पाया गया कि शारीरिक सीमा आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था और यदि किसी साथी को आवास की आवश्यकता होती है तो वे डॉक्टर के नोट के साथ छात्र मामलों के कार्यालय से अनुरोध करेंगे और किसी चिकित्सा परीक्षा की आवश्यकता नहीं थी।

बी.

सी.

22. वास्तव में कैलआर्ट्स की प्रतिक्रिया ने आगे कहा कि "सभी

एक रंग नेत्रहीन छात्र को अपना पाठ्यक्रम पूरा करने में सक्षम बनाने के लिए उचित आवास प्रदान किया जाएगा।" समिति ने कहा कि

एफ. टी. आई. आई., एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित प्रमुख फिल्म संस्थान होने के नाते, रंग दृष्टिहीन उम्मीदवारों के लिए उचित आवास बनाकर एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए।फिल्म निर्माण की कला एक सहयोगी कला है और किसी भी सीमा की भरपाई पेशेवरों की टीम द्वारा की जाएगी।इस प्रकार, प्रमुख विदेशी संस्थानों द्वारा अपनाया गया सर्वसमावेशक दृष्टिकोण इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि एफ. टी. आई. आई. को भी रंग नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए अपने दरवाजे खोलने चाहिए।काली और सफेद फिल्में:

डी.

ई.

23. इसके बाद समिति ने काले और सफेद फिल्मों पर विचार-विमर्श किया है जो फिल्म उद्योग की एक अभिन्न शैली है जहां रंग दृष्टिहीन व्यक्ति को काले और सफेद फिल्म बनाने में कोई बाधा नहीं होगी।यह अपने आप में एक अच्छे कारण के रूप में देखा गया है कि रंग नेत्रहीन व्यक्तियों को फिल्म स्कूलों में जाने से रोका न जाए।ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के चित्रण दिए गए हैं जिन्हें शिंडलर की सूची सहित आलोचनात्मक प्रशंसा मिली है।

एफ.

शारीरिक/संवेदी सीमा और कलाएँ:

24. चर्चा का एक दिलचस्प पहलू कला में शारीरिक और संवेदी सीमा के शीर्षक के तहत है जो महान उत्कृष्टता वाले व्यक्तियों को सामने रखता है जिन्होंने रंग अंधापन के कारण कोई सीमा नहीं देखी है।हम उसी को नीचे के रूप में निकालना चाहेंगे:

जी.

"o. शारीरिक/संवेदी सीमाएँ और कलाएँ:फिल्म पेशेवरों, कलाकारों, अभिनेताओं आदि के असंख्य उदाहरण हैं जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

अपनी व्यक्तिगत सीमाओं के बावजूद अपनी नौकरी पर।निम्नलिखित उदाहरण तर्क को बढ़ाते हैं:

i. शीर्ष भारतीय सिनेमेटोग्राफर (एफ. टी. आई. आई. के पूर्व छात्र भी) मधु अम्बत ने तीन बार सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफी का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता है।उन्होंने विभिन्न भाषाओं में 100 से अधिक फीचर फिल्में शूट की हैं।उन्हें 10 साल की उम्र में लकवा का दौरा पड़ा, जिससे उनकी संचालन भुजा प्रभावित हुई, लेकिन उन्होंने इस शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण शिल्प में सफल होने के लिए अपनी सीमाओं को पार कर लिया है।

बी.

ii.लॉरेन लॉन्ग एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं जिन्होंने अपने रंगांधापन के बावजूद बराक ओबामा की 'ऑफ दी आई सिंग' सहित अनगिनत बच्चों की पुस्तकों पर काम किया है।कला विद्यालय विद्वान , उन्होंने रंग सिद्धांत और अपनी अक्षमता के आसपास काम करने के तरीके सीख लिए। उनका कहना है कि उनके पास मूल्यों या संतृप्ति की एक उच्च भावना है जो उनकी मदद करती है और सहकर्मियों और परिवार की मदद से काम करती है।

सी.

डी.

iii.एक विकलांग, सुधा चंद्रन एक प्रशंसित भरतनाट्यम नर्तकी बन जाती हैं।जयपुर पैर के साथ, सुधा ने दुनिया भर में प्रदर्शन किया और अनगिनत फिल्मों और टेलीविजन शो में अभिनय किया है।

ई.

iv.प्रणव लाल, एक नेत्रहीन फोटोग्राफर, ध्वनि का उपयोग करके चित्र लेता है।

बनाम ग्रैमी पुरस्कार विजेता डेम एवलिन ग्लेनी, स्कॉटिश तालवादक ने 8 साल की उम्र में अपनी श्रवण शक्ति खोनी शुरू कर दी और 12 साल की उम्र तक पूरी तरह से बहरी हो गई। अपने बैंड शिक्षक के साथ मिलकर, उन्होंने अपने हाथों, पैरों और चेहरे के माध्यम से संगीत के कंपन को महसूस करने के तरीके विकसित किए।उन्होंने सचमुच अपने शरीर के बाकी हिस्सों के साथ खुद को सही मायने में 'सुनना' सिखाया।

एफ.

vi.हेलेन केलर, एक अविस्मरणीय विद्या।उन्होंने हार्वर्ड में रैडक्लिफ से सुम्मा कम लाउड में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और ऐसी भाषा में 12 पुस्तकें प्रकाशित कीं जिन्हें उन्होंने न तो सुना और न ही पढ़ा।वह बहरी और अंधी दोनों थी।

जी.

vii.गंभीर बोलने की अक्षमता वाले रोवन एटकिंसन एक महान अभिनेता बन गए, जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए मिस्टर बीन को अमर कर दिया।

एच.

1103

आशुतोष कुमार बनाम भारत और ए. एन. आर. का फिल्म और टेलीविजन संस्थान। [संजय किशन कौल, जे।] ए.

ए.

viii.इयान ट्रेहर्न बहुत बधिर और 95 प्रतिशत अंधे हैं और एक फोटोग्राफर हैं।उन्होंने टोक्यो 2020 पैरा-ओलंपिक एथलीटों के चित्र बनाए।वह चित्रकारी भी करते हैं, फिल्में बनाते हैं और संगीत भी बजाते हैं।"

25. कृत्रिम चश्मे के उपयोग सहित जिन दो अन्य पहलुओं पर चर्चा की गई है, उन्हें भी नीचे पुनः प्रस्तुत किया जा रहा हैः

बी.

"पी. कोडाः94 वें अकादमी पुरस्कार (2022)/ऑस्कर पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ चित्र, सर्वश्रेष्ठ अनुकूलित पटकथा और सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए फिल्म 'कोडा' (बधिर वयस्कों के बच्चे) को प्रदान किया गया है।फिल्म में कई बधिर अभिनेता हैं जिनमें मार्ली मैटलिन, एक ऑस्कर और बाफ्टा (ब्रिटिश अकादमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन आर्ट्स) पुरस्कार विजेता हैं।

सी.

प्र. प्रोस्थेटिक ग्लासःकृत्रिम रंग दृष्टि सुधार चश्मे जैसे कि एनक्रोमा ब्रांड नाम के तहत विपणन किए जाने वाले चश्मे, जो रंग अंधापन के प्रभाव को कम कर सकते हैं, के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और स्थिति के प्रभाव को सीमित करने के लिए एफ. टी. आई. आई. में आवेदन करने वाले रंग अंध उम्मीदवारों द्वारा उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए।"

डी.

निष्कर्ष/अनुशंसाएँः

ई.

26. पैरा IV के तहत समिति के निष्कर्ष और सिफारिशें इस प्रकार हैंः-

"IV. निष्कर्ष/सिफारिशें सभी प्रासंगिक मुद्दों और विचार-विमर्श की जांच के बाद, समिति अपने द्वारा भेजे गए संदर्भों के जवाब में निम्नलिखित निष्कर्ष/सिफारिशें करती हैः

एफ.

ए। री में।न्यायालय का संदर्भ #1:"क्या संपादन में डिप्लोमा के लिए प्रदान किया गया पाठ्यक्रम रंग अंधापन से पीड़ित अपीलार्थी द्वारा सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है?"

जी.

समिति की सिफारिशें -अपीलार्थी श्री आशुतोष कुमार, जिनके पास लाल और हरे रंग की दृष्टि की कमी है और सीपी4 की रंग धारणा है, के अनुसार

एच.

एम्स मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित डिप्लोमा इन फिल्म एंड एडिटिंग पाठ्यक्रम के मौजूदा पाठ्यक्रम को पूरा करने में कठिनाई होगी। यह विशेष रूप से बीस मिनट के 'कलर ग्रेडिंग मॉड्यूल' के कारण है जो फिल्म संपादन पाठ्यक्रम का हिस्सा है।हालांकि, रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल की फिल्म संपादन पाठ्यक्रम या फिल्म संपादक की पेशेवर भूमिका के लिए कोई प्रासंगिकता नहीं है (श्री के. राजसेकरन, एचओडी संपादन, एफटीआईआई, इस बात से सहमत नहीं हैं कि रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल फिल्म संपादन पाठ्यक्रम के लिए अप्रासंगिक है)।

बी.

सी.

बी। री में।अदालत का Reference#2:"एक अधिक व्यापक अभ्यास को सुविधाजनक बनाने के लिए, समिति की भूमिका उन सभी पाठ्यक्रमों के रंग अंधापन के पहलू पर विचार करना होगी जिनके लिए इसे अयोग्यता माना जाता है।"

डी.

समिति की सिफारिशें -यह समिति की राय है किः

आई. यह अनुशंसा की जाती है कि रंग अंधता वाले व्यक्तियों को एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित सभी पाठ्यक्रमों में नामांकन करने की अनुमति दी जानी चाहिए। रंग-दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए एफ. टी. आई. आई. में प्रवेश पर कोई रोक नहीं होनी चाहिए।शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में सहायक द्वारा किसी भी सीमा को पार किया जा सकता है।

ई.

ii.एफ. टी. आई. आई. को रंग अंधता वाले उम्मीदवारों के लिए अपने पाठ्यक्रम में उन सभी पाठ्यक्रमों में उचित समायोजन करना चाहिए जहां रंग अंध व्यक्तियों के प्रवेश पर रोक है। उदाहरण के लिए, उन मुख्य क्रेडिट के लिए पाठ्यक्रम में वैकल्पिक/वैकल्पिक मॉड्यूल प्रदान करके जिनके लिए गहन रंग प्रशंसा की आवश्यकता हो सकती है या किसी अन्य तरीके से।

एफ.

जी.

iii.फिल्म संपादन पाठ्यक्रम में मौजूदा डिप्लोमा में रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल को या तो बाहर रखा जाना चाहिए या वैकल्पिक बनाया जाना चाहिए, ए

एच.

1105

आशुतोष कुमार बनाम भारत और ए. एन. आर. का फिल्म और टेलीविजन संस्थान। [संजय किशन कौल, जे।] ए.

जिससे रंग अंधता वाले व्यक्तियों के लिए प्रवेश की सीमा बढ़ जाती है।"

27. उपरोक्त निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि रंग अंधता वाले सभी व्यक्तियों को एफ. टी. आई. आई. द्वारा प्रस्तावित सभी पाठ्यक्रमों में नामांकन करने की अनुमति दी जानी चाहिए और किसी भी सीमा को दूर किया जा सकता है।एफ. टी. आई. आई. को रंग अंधता वाले उम्मीदवारों के लिए अपने पाठ्यक्रम में समायोजन करना चाहिए और फिल्म संपादन पाठ्यक्रम में मौजूदा डिप्लोमा में रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल के 20 मिनट के अवरोधक तत्व को बाहर रखा जाना चाहिए या वैकल्पिक बनाया जाना चाहिए।

बी.

28. हमें एक चेतावनी को छोड़कर सभी पहलुओं को देखने और सामूहिक रूप से विचार रखने के लिए समिति द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करनी चाहिए।यह चेतावनी श्री के. राजसेकरन की ओर से है, जैसा कि देखा गया है।आइए अब हम चेतावनी की ओर मुड़ें।

सी.

29. श्री राजसेकरन किसी भी तरह इस बात से सहमत नहीं हैं कि रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल फिल्म संपादन पाठ्यक्रम के लिए अप्रासंगिक है क्योंकि एफ. टी. आई. आई. की भूमिका सभी समावेशी शिक्षा देना है।उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया गया है और इसे आगे शैक्षणिक परिषद और शासी परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया है और रंग श्रेणीकरण मॉड्यूल की अपरिवर्तनीयता के पक्ष में राय देना "सीमा को पार करना होगा और यह भी होगा"

डी.

उन विशेषज्ञों के ज्ञान को चुनौती देना जिन्होंने बहुत सोच-समझकर किया है

इस पाठ्यक्रम को तैयार किया।" पाठ्यक्रम 2015 में तैयार किया गया था।सात साल बीत चुके हैं।श्री राजसेकरन की हिचकिचाहट से ऐसा प्रतीत होता है कि वह संस्थान में अपने पैर पसारना नहीं चाहेंगे।

ई.

30. उन्होंने अन्य पाठ्यक्रमों पर भी बल देने की कोशिश की है कि सिनेमेटोग्राफी, कला निर्माण और डिजाइन के रंग दृष्टिहीन छात्रों को इन पाठ्यक्रमों के तहत फिर से अध्ययन करना बहुत मुश्किल होगा।

एफ.

पाठ्यक्रम को विशेषज्ञों द्वारा सावधानीपूर्वक और सोच-समझकर तैयार किया जा रहा है।"

31. दिलचस्प बात यह है कि उनका अंतिम विचार यह है कि "जहां भी संभव हो, एफ. टी. आई. आई. ने पहले ही कुल 11 पाठ्यक्रमों में से 05 पाठ्यक्रमों में रंगीन पट्टियों को समायोजित कर लिया है"!

32. इस प्रकार, वह जो मानते हैं वह एक यथास्थिति है।एफ. टी. आई. आई. सबसे अच्छी तरह से जानता है, इसके विशेषज्ञ सबसे अच्छी तरह से जानते हैं।हमें मत छुओ!इस न्यायालय द्वारा गठित विशेषज्ञ पैनल की राय और एक असहमति को छोड़कर अपने फैसले में सर्वसम्मति के बावजूद।

जी.

33. उचित सम्मान के साथ, हम इस पाठ्यक्रम को स्वीकार्य नहीं पाते हैं।

एच.

34. समिति की रिपोर्ट का विषय कला और संस्कृति की सराहना, नवाचार, अंतर्ज्ञान, बाधाओं द्वारा अप्रतिबंधित, जिन्हें सहायता से दूर किया जा सकता है, पर आधारित है।35. हम समिति के बहुमत के दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत हैं और इस प्रकार, हमारा मानना है कि एफ. टी. आई. आई. द्वारा अपने पाठ्यक्रम में इसे अपनाने की आवश्यकता है।हम यह नहीं मानते कि यह एफ. टी. आई. आई. की स्वतंत्रता को बाधित करता है, जैसा कि प्रत्यर्थी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रचार करने की मांग की गई थी, लेकिन एफ. टी. आई. आई. को इस क्षेत्र में अपने अग्रणी प्रयासों में और भी व्यापक प्रचार प्रदान करता है।महान फोटोग्राफर के रूप में

बी.

एंसेल एडम्स ने एक बार कहा था, "आप केवल एक कैमरे से तस्वीर नहीं बनाते हैं।आपने जो भी तस्वीरें देखी हैं, जो किताबें पढ़ी हैं, जो संगीत सुना है, उन्हें आप फोटोग्राफी के काम में लाते हैं।

सी.

जिन लोगों से आपने प्यार किया है।" हमारा यह भी मानना है कि यदि अन्य संस्थान भी इसी तरह का शैक्षिक पाठ्यक्रम चलाते हैं, तो उन्हें भी इस विषय पर चर्चा का पालन करना होगा क्योंकि यह समिति का निष्कर्ष है।

डी.

36. हम केवल यह देख सकते हैं कि संभवतः एक मोलहिल से बाहर एक पहाड़ बनाया जा रहा है क्योंकि विशेष मॉड्यूल पूरे पाठ्यक्रम में 20 मिनट का मॉड्यूल है और यहां तक कि समिति ने भी राय दी है कि इसे वैकल्पिक बनाया जा सकता है।

37. समय बीतने और हमारा पूर्व आदेश दुर्भाग्य से हमें अपीलार्थी को राहत देने की अनुमति नहीं देता है, हालांकि वह यह देखने के लिए एक ध्वजवाहक रहा है कि दूसरों के लिए और उसके लिए भी भविष्य के लिए परिवर्तन होते हैं।

ई.

38. यह "आज कोई जाम नहीं" का मामला प्रतीत होता है, लेकिन फिर कभी-कभी उन व्यक्तियों द्वारा निभाई गई एक अग्रणी भूमिका होती है जिन्हें तुरंत प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिल सकता है।

एफ.

39. हम केवल यह उम्मीद कर सकते हैं कि हमारे द्वारा अपनाई गई यह रिपोर्ट और निर्णय कला रूपों की सराहना के व्यापक परिप्रेक्ष्य में आगे बढ़ेगा।हम अरस्तू को याद करेंगे जब उन्होंने कहा था

कि "कला का उद्देश्य वस्तुओं के बाहरी रूप का प्रतिनिधित्व करना नहीं है, बल्कि उनके आंतरिक महत्व का प्रतिनिधित्व करना है।" हालांकि संदर्भ में बनाया गया है

जी.

कला और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए, हम में से किसी एक द्वारा की गई टिप्पणियों को पुनः प्रस्तुत करना भी उचित होगा (माननीय संजय किशन कौल,

जे.) मकबूल फिदा हुसैन बनाम राजकुमार पांडे और अन्य में। (2008 एससीसी)

ऑनलाइन डेल 562):

एच.

1107

आशुतोष कुमार बनाम भारत और ए. एन. आर. का फिल्म और टेलीविजन संस्थान। [संजय किशन कौल, जे।]

ए.

"114. मानव व्यक्तित्व पूरी तरह से खिल सकता है और मानवतावाद गहरी जड़ें जमा सकता है और केवल एक ऐसे वातावरण में इसका विकास हो सकता है जहां सभी सहिष्णुता और संयम की भावना प्रदर्शित करते हैं।"

40. हम उपरोक्त आदेश के साथ कार्यवाही को बंद कर देते लेकिन अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता हमें दिनांकित 30.11.2021 आदेश में की गई हमारी टिप्पणियों पर फिर से विचार करने के लिए मनाने का एक बहादुर प्रयास करते हैं जिसमें हमने राय दी थी कि अपीलार्थी को प्रक्रिया से गुजरना होगा।विद्वान अधिवक्ता का प्रस्तुतिकरण इस पर आधारित है कि

बी.

विकास कुमार बनाम संघ लोक सेवा आयोग और अन्य में प्रतिपादित "उचित समायोजन" का सिद्धांत। 1 और प्रणय कुमार पोद्दार बनाम त्रिपुरा राज्य और अन्य। 2 और वह तर्क देता है कि

सी.

न्यायालय ने भारत के संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने वाले उम्मीदवार को नवीन रूप से प्रवेश प्रदान किया।

41. वह प्रस्तुत करता है कि अपीलार्थी लगभग छह महीने तक पाठ्यक्रम से गुजरा था और जब तक यह बाधा उसके रास्ते में नहीं आई, तब तक वह चिकित्सकीय रूप से स्वस्थ पाया गया।उनका सुझाव है कि उम्मीदवार को अगले शैक्षणिक वर्ष में एक व्यक्ति द्वारा पाठ्यक्रम की संख्या बढ़ाकर समायोजित किया जाना चाहिए।

डी.

42. हालांकि, इससे पहले कि हम इस तरह के पाठ्यक्रम को शुरू करने पर विचार करें, हमारे पास संस्थान के विचार होने चाहिए जो इस संबंध में प्रतिक्रिया दायर करेगा और समाधान खोजने का प्रयास करेगा।प्रार्थना के अनुसार दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल किया जाए।

ई.

43. यदि कोई प्रत्युत्तर हो तो इस पहलू पर एक सप्ताह के भीतर दायर किया जाए।

एफ.

10.05.2022 पर आगे की कार्यवाही के लिए सूची बनाएँ।

निधि जैन और अमरेंद्र कुमार

निर्देश जारी किए गए।

(सहायकः अजय, एलसीआरए)

जी.

1 (2021) 5 एससीसी 370 2 (2017) 13 एससीसी 351

एच.